कभी यह नहीं कह सकती कि अमुक लोग मेरी सुनवाई नहीं करते, ना ही वो यह कह सकती है कि मुझे थोड़ा पैसा दे दो या मेरे से थोड़ा मीठा बोलो। नहीं, वह आत्मा को संवार कर सर्व समस्याओं का समाधान कर लेती है। मंदिर की देवी सदृश दूसरों को अपने अनुकूल बना लेती है।

आत्मावलोकन

नारी, घर के सामान की जब-तब सूची बनाती है कि क्या-क्या समाप्त हो गया और क्या-क्या मंगवाना है। इसी प्रकार वह जीवन के मूल्यों की भी सूची बनाए कि मेरे में कौन-कौन से मूल्य समाप्त हो गये हैं। क्या मेरे मन के स्टोर में निर्भयता है, क्या सहनशीलता का पूरा स्टॉक है? एकाग्रता, संतुष्टता, पवित्रता, उमंग-उत्साह, नम्रता, सहयोग, हर्षितमुखता का स्टॉक भी चेक करे। यदि ये गुण नहीं हैं तो इनको भी जल्द से जल्द भरे। हम वस्तुओं के नहीं, इन गुणों के मालिक हैं। वस्तुएँ और व्यक्ति भगवान को अर्पित कर देने से ये सभी गुण हमारे आगे अर्पित हो जाते हैं। चीज़ की कीमत नहीं होती, हमारे शब्दों की कीमत होती है। पाई-पैसे की चीज़ के लिए कीमती शब्दों को व्यर्थ गंवाने की कोई ज़रूरत नहीं होती। पाई-पैसे की चीज़ तो हमारे जाने के बाद ठोकरों में रुलेगी पर हमारे बोल, कर्म हमारे साथी बने रहेंगे। तो ठोकरों में रहने वाली चीज़ों के लिए, सदा के साथी बोल और कर्म को क्यों बिगाड़ा जाये?

सौन्दर्य पिपासा

नारी सौन्दर्य-पसंद होती है। स्वयं को सुन्दर बनाकर रखना चाहती है। सौन्दर्य की इस लालसा ने ही जगह-जगह ब्यूटी पार्लर खुलवाये हैं। इस अल्पकाल के सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए वह पैसा, समय और शक्ति नि:संकोच खर्च कर देती है पर अफसोस यह है कि यह अल्पकालीन सौन्दर्य, पानी या पसीने के हलके से छींटे से ही तितर-बितर हो जाता है। तो नारी क्या करे? स्थायी सौन्दर्य कहाँ से लाये? अध्यात्म है स्थायी सुन्दरता का आधार। गुणों के द्वारा व्यक्तित्व में जो चमक आती है, वह स्थायी होती है। समय या परिस्थितियों की धूल उसे गंदा नहीं कर सकती। सजने-सजाने का यह संस्कार भी अध्यात्म में बहुत काम आता है। बाहरी सौन्दर्य से हटकर अब वह अपने आत्मन का ईश्वरीय गुणों से यूँ शृंगार करती है –

1. मांग में परमधाम की लाली की स्मृति
2. मस्तक पर आत्म-तेज का तिलक
3. आँखों में पवित्र दृष्टि का कजरा
4. कानों में ज्ञान-रत्नों के कर्णफूल
5. नाक में स्वमान की नथ
6. होंठों पर मधुर मुसकान की लाली
7. गले में मधुर वाणी की कंठी
8. हृदय में एक प्रभु के प्यार का हार
9. कमर में साहस की तगड़ी (करधनी)
10. ईश्वर का दायाँ हाथ बनने के बाजूबंद
11. ईश्वरीय मर्यादाओं का कंगन
12. ईश्वर से मन की सगाई की अंगूठी
13. सच्चाई की मेहंदी
14. श्रेष्ठ चाल-चलन की पाजेब
15. बीस नाखूनों का जोर लगाकर कर्मातीत बनने की नेलपॉलिश
16. प्रभु के पग पर पग रख अनुकरण करने के बिछुए

यही आंतरिक शृंगार कालांतर में सोलह कला संपन्न दैवी पद का आधार बनता है।

सादा जीवन, उच्च विचार

अंदर से आत्मा का शृंगार, बाहर से सादा जीवन और उच्च विचार – यही है ईश्वर पिता की दिलतख्तनशीन नारी की पहचान। ऐसी नारी कहेगी –

''जब से जीवन में रूहानियत और सद्गुण आये हैं, मुझे लग रहा है कि दुनिया की कोई चीज़ मुझे अप्राप्त नहीं है। मुझे गर्व है ऐसा जीवन देने वाले परमात्मा पर जिसने मुझे इतना समर्थ बना दिया। दुख को मैं जानती नहीं हूँ, अशांति और तनाव मेरे शब्दकोष में नहीं हैं, प्यार, सुख, हँसी, खुशी, आनन्द को लिए मैं जीवन में आगे बढ़ रही हूँ। ये चीज़ें

(शेष..पृष्ठ 26 पर)